OPEN ACCESS

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 5 Issue 2 [Mar- Apr] Year 2026*

Research Article

शहडोल ज़िले की जनजातीय अर्थव्यवस्था: चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

अजय सिंह पटेल [1], डॉ० संतोष पुरी [2*]

[1] विजिटिंग फैकेल्टी, भूगोल विभाग, पंडित शंभूनाथ शुक्ला विश्वविद्यालय, शहडोल, मध्य प्रदेश, भारत

[2] विजिटिंग फैकेल्टी, अर्थशास्त्र विभाग, पंडित शंभूनाथ शुक्ला विश्वविद्यालय, शहडोल, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author: *डॉ० संतोष पुरी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19654214

सारांश

मध्य प्रदेश का शहडोल ज़िला जनजातीय बहुल क्षेत्र है, जहाँ गोंड, बैगा, कोल तथा अन्य जनजातीय समुदाय बड़ी संख्या में निवास करते हैं। जनजातियाँ विषम धरातलीय पहाड़ी, पठारी भागों में रहती हैं। विषम धरातल में अधिकांशतः वन क्षेत्र का विस्तार अधिक होता है। यहाँ नदियों के पास की भूमि की मिट्टी की गहराई अपेक्षाकृत अधिक है, जिसमें कृषि की संभावना है। जनजातीय संस्कृति सरल है जिसमें तकनीक का कम से कम उपयोग है अतः इनकी अर्थव्यवस्था जीविकोपार्जन तक सीमित है। इस सरल तकनीक और स्थानीय संसाधनों की अन्योन्य क्रिया से उत्पन्न जनजातीय अर्थव्यवस्था में मुख्यतः कृषि, वनोपज संग्रह, पशुपालन और पारंपरिक श्रम है। इस शोध-पत्र मे शहडोल ज़िले की जनजातीय अर्थव्यवस्था की संरचना, प्रमुख चुनौतियों तथा विकास की संभावनाओं का विश्लेषण है और स्थानीय स्तर पर समावेशी विकास के लिए सुझाव प्रस्तुत करता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 12-03-2026
- **Accepted:** 13-04-2026
- **Published:** 19-04-2026
- **IJCRM:**5(2); 2026: 696-701
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

पटेल ए. एस., पुरी एस. शहडोल ज़िले की जनजातीय अर्थव्यवस्था: चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(2):696-701.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: जनजातीय अर्थव्यवस्था, शहडोल जिला, आदिवासी समुदाय, आर्थिक चुनौतियाँ, विकास की संभावनाएँ

© 2026 अजय सिंह पटेल, डॉ० संतोष पुरी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

आदिवासी शब्द का अर्थ भारत के पुरातन निवासी हैं। इन्हें प्रकृति पुत्र, जनजाति, आदिम जाति, वनवासी आदि नामों से जाना जाता है। मुख्य धारा से दूर एकाकी भौगोलिक दशाओं में दीर्घकाल तक किसी मानव समुदाय के रहने से अनेक पीढ़ीयों पश्चात् उस समुदाय में विशिष्ट शारीरिक लक्षण, भाषा, वस्त्र, भोजन, आवास, परम्पराओं, संस्कृति का निर्माण हो जाता है। ऐसे मानव समुदाय को उन विशिष्ट सांस्कृतिक लक्षणों के कारण आदिवासी कहा जाता है। मध्य प्रदेश के शहडोल जिले में इसी प्रकार के भिन्न भिन्न संस्कृति को धारण किये हुए मानव समुदाय हैं जिनकी संस्कृति और भौगोलिक दशाओं की अन्योन्य क्रिया से उनकी आर्थिक क्रियाओं का निर्माण हुआ है।

शहडोल ज़िला मध्य प्रदेश के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है और प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध क्षेत्र है। ज़िले का एक बड़ा भाग वन क्षेत्र से आच्छादित है, जिसके कारण यहाँ की जनजातीय जनसंख्या का जीवन वनों और भूमि से गहराई से जुड़ा हुआ है। जनजातीय परम्पराओं से प्राप्त सरल तकनीक आधारित आर्थिक क्रियाओं और स्थानीय संसाधनों के दोहन दोनों पिछड़ी अवस्था में है। आदिवासी समाज में या तो परिवर्तन के प्रति आग्रह कम होता है या नहीं होता है जिससे उनकी आर्थिक क्रियाएँ सतत् रूप से पिछड़ी अवस्था में हैं। स्थानीय संसाधन प्राकृतिक वन, भूमि और खनिज आधारित हैं। कानूनी बाध्यताओं के कारण जनजातीय समाज इनका दोहन पारम्परिक रूप से नहीं कर पा रहा है जिससे उनका आर्थिक पिछड़ापन बना हुआ है।

समस्या प्रश्न-

1. क्या शहडोल जिले में स्थित आदिवासी समुदायों के लिए समस्याएं और चुनौतियाँ हैं?
2. क्या शहडोल जिले में उपस्थित स्थानीय आर्थिक संसाधनों में जनजातीय समूह के लिए आर्थिक अवसर उपलब्ध हैं ?

2. परिकल्पना - यह शोधपत्र उक्त समस्याओं के उत्तर प्राप्त करने हेतु यह परिकल्पना करता है कि

1. शहडोल जिले की जनजातियों की आर्थिक समस्यायें हैं।
2. शहडोल जिले की जनजातियों की आर्थिक समस्याओं को हल करने के लिए स्थानीय अवसर हैं।

3. शोध प्रविधि -उक्त परिकल्पनाओं के परीक्षण और सत्यता की जाँच करने के लिए द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया हैं। शीर्षक से संबन्धित साहित्य का अध्ययन किया गया है। इस साहित्य में पूर्व शोध पत्र, सरकार एवं गैर सरकारी दस्तावेजों का अध्ययन, नृविज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, भूगोल, इतिहास आदि आवश्यक विषयों के लेखकों की किताबों का अध्ययन किया गया है।

4. शहडोल जिला -

4.1 स्थिति एवं विस्तार - शहडोल जिला मध्य प्रदेश के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित जनजातीय जिला है। यह जबलपुर रायपुर रेलमार्ग पर स्थित है यह मध्यप्रदेश की पूर्वी सीमा पर छत्तीसगढ़ से लगा हुआ है।

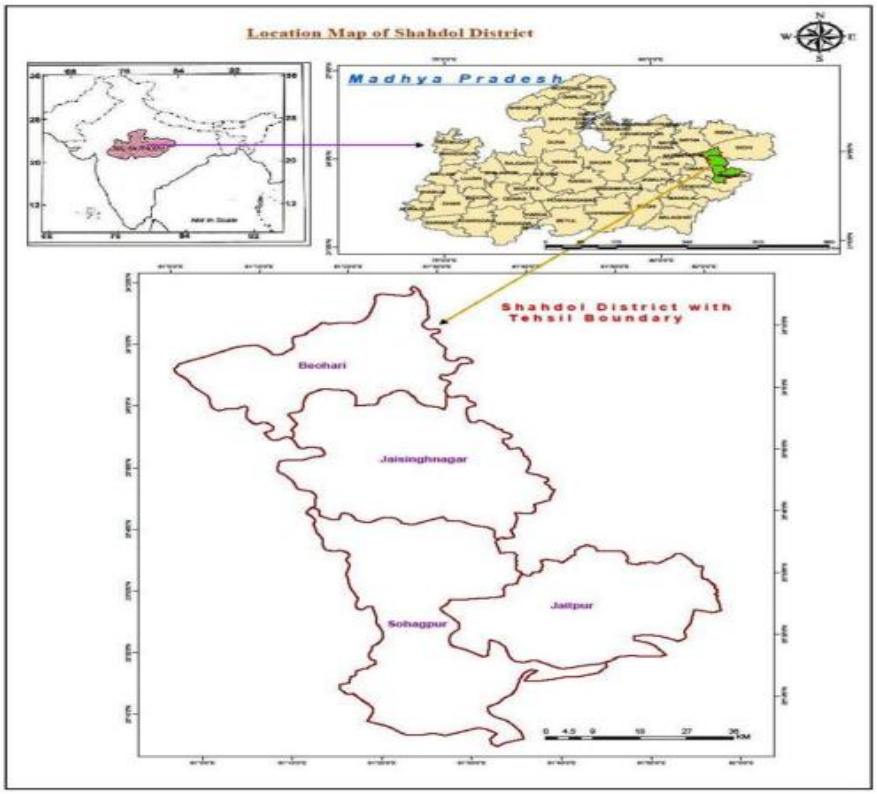

Fig. 1.1: Index map, Shahdol District

स्लोत: https:@@commons-wikimedia- org@wiki@ File:MP&Shahdol&district&map-svg 10 dec 2024

© 2026 अजय सिंह पटेल, डॉ० संतोष पुरी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

यह जिला दक्षिण में अनूपपुर, उत्तर पश्चिम में सतना, उत्तर पूर्व में सीधी, पश्चिम में उमरिया और रीवा जिलों और पूर्व में छत्तीसगढ़ से घिरा हुआ है। यह पूर्व-पश्चिम दिशा में लगभग 110 किमी और उत्तर-दक्षिण दिशा में लगभग 170 किमी तक फैला हुआ है। भौगोलिक अक्षांशों के अनुसार जिला 23^0 38′ से 24^0 20′ उत्तर और 80^0 28′ से 82^0 12′ पूर्व देशांतर के बीच स्थित है।

4.2 शहडोल जिले का भूगोल

शहडोल का भौगोलिक ढांचा विविध और पर्वतीय-मैदानी रूपों का मिश्रण है शहडोल जिले के दक्षिणी भाग में मैकाल श्रेणी के ऊँचे पहाड़ और पठार हैं। मध्य भाग में पूर्वी पठार के पहाड़ी क्षेत्र हैं इनके मध्य से सोन नदी की धारा बहती है जो सोन का मैदान बनाती है। जिले की समुद्र तल से औसत ऊँचाई लगभग 450 से 500 मीटर है। दक्षिण में कुछ स्थानों की ऊँचाई 900 मीटर से ऊपर तक पहुँचती है। सबसे ऊँचा बिंदु सिंगिंगढ़ पहाड़ी है, जिसकी उँचाई 1123 मीटर है।

4.3 प्राकृतिक संसाधन

पर्वतीय एवं पठारी धरातलीय विशेषताएँ वन भूमि का पोषण करती हैं इस कारण शहडोल जिला घने जंगलों से भरा है, जिनमें मुख्य रूप से शाल और मिश्रित वन पाये जाते हैं। स्थानीय आदिवासी समुदायों के लिए वन क्षेत्र अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शहडोल से बहने वाली प्रमुख नदियाँ हैं सोन नदी और उसकी सहायक। अन्य छोटी नदियाँ जैसे बनास, चंदास, टिपण, बकान आदि भी जिले से गुजरती हैं।

यहाँ के पहाड़, पठार, जंगल और नदी घाटियाँ की दशायें यह दर्शाती हैं कि यह जिला प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है और यहाँ के स्थानीय जीवन पर प्रकृति का गहरा प्रभाव है। शहडोल की जनजातीय अर्थव्यवस्था का अध्ययन क्षेत्रीय विकास, सामाजिक न्याय और सतत आजीविका के लिए अत्यंत आवश्यक है।

5. शहडोल ज़िले में जनजातीय समुदायों की स्थिति

शहडोल जिला (मध्य प्रदेश) एक आदिवासी बहुल जिला है। जिले की कुल जनसंख्या का एक बड़ा भाग अनुसूचित जनजातियों का है। यहाँ कई जनजातियाँ निवास करती हैं, जिनमें गोंड सबसे प्रमुख है। ।

5.1 जनजातिवार संख्या (जनगणना 2011 के आधार पर)

2011 की जनगणना के अनुसार मध्य प्रदेश के शहडोल जिले की कुल जनसंख्या 10,66,063 है। मध्य प्रदेश के शहडोल जिले में अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का प्रतिशत 44.7 प्रतिशत है।

नाम	संख्या
कुल जनसंख्या	476008
बैगा	99299
गोंड	185916
कोल	105046
पनिका	17295
पाव	27084
अगरिया	5844
भारिया	5270
खरवार	4554

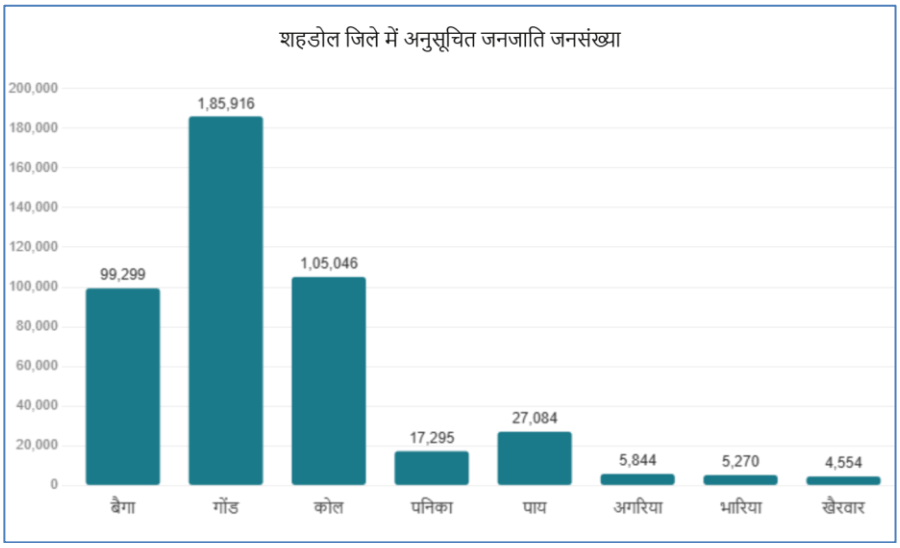

© 2026 अजय सिंह पटेल, डॉ० संतोष पुरी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

स्पष्ट है कि गोंड जनजाति शहडोल जिले की सबसे बड़ी और प्रभावशाली जनजाति है।

5.2. शहडोल जिले में प्रमुख जनजातियों का वितरण

(क) गोंड जनजाति - जैतपुर, सोहागपुर, बुढार, ब्यौहारी, के वन एवं ग्रामीण क्षेत्र

(ख) कोल जनजाति - ब्यौहारी क्षेत्र, उत्तर-पूर्वी भाग, के ग्रामीण एवं खेतिहर क्षेत्र

(ग) बैगा जनजाति - वनवर्ती क्षेत्र, जैतपुर और आसपास के जंगल में बैगा जनजाति विशेष रूप से वन आधारित जीवन के लिए जानी जाती है

(घ) अगरिया जनजाति - सीमित क्षेत्रों में पारंपरिक रूप से लोहे के काम और वनोपज से जुड़ी है।

6. शहडोल ज़िले की जनजातीय अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ

शहडोल जिले में अधिकांश जनजातियाँ जंगलों के आसपास निवास करती हैं। कृषि, वनोपज और मजदूरी प्रमुख आजीविकाएँ हैं। शहरी क्षेत्रों में जनजातीय जनसंख्या कम है। यहाँ की जनजातीय अर्थव्यवस्था मुख्यतः प्राकृतिक संसाधनों, जंगल और कृषि पर आधारित है। अलग-अलग जनजातियों की आजीविका के साधन और आर्थिक गतिविधियाँ भिन्न हैं।

6.1. गोंड जनजाति की आर्थिक विशेषताएँ - गोंड शहडोल की सबसे बड़ी जनजाति है। कृषि प्रमुख आजीविका (धान, कोदो, कुटकी), वनोपज संग्रह (महुआ, तेंदूपत्ता, चिरौंजी), पशुपालन (गाय, बैल, बकरी), आंशिक मजदूरी और सरकारी योजनाओं पर निर्भरता, आत्मनिर्भर लेकिन सीमित आय वाली अर्थव्यवस्था, गोंडों की अर्थव्यवस्था कृषि-वन आधारित मिश्रित अर्थव्यवस्था है।

6.2 कोल जनजाति की आर्थिक विशेषताएँ - कोल जनजाति मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में पाई जाती है। मुख्य विशेषताएँ - कृषि मजदूरी पर अधिक निर्भरता, सीमित भूमि स्वामित्व, धान और गेहूँ की खेती, निर्माण कार्य और असंगठित क्षेत्र में काम, कम पूँजी और कम तकनीकी संसाधन, कोल जनजाति की अर्थव्यवस्था मजदूरी प्रधान है।

6.3. बैगा जनजाति की आर्थिक विशेषताएँ- बैगा जनजाति विशेष रूप से वनवर्ती जनजाति है। इसकी मुख्य विशेषताओं में वनोपज पर अत्यधिक निर्भरता, पारंपरिक कृषि (बेवर/झूम जैसी पद्धति), शिकार और जड़ी-बूटी संग्रह, नगण्य नकद आय, आत्मनिर्भर जीवन शैली, बैगा जनजाति की अर्थव्यवस्था पूर्णतः वन आधारित मानी जाती है।

6.4. अगरिया जनजाति की आर्थिक विशेषताएँ- अगरिया एक छोटी लेकिन विशिष्ट जनजाति है। पारंपरिक रूप से लोहे का कार्य, औजार और कृषि उपकरण बनाना, वनोपज संग्रह, आधुनिक तकनीक के अभाव में सीमित आय, वर्तमान में मजदूरी की ओर झुकाव, अगरिया जनजाति की अर्थव्यवस्था पारंपरिक शिल्प आधारित है। उक्त आधार पर जनजातीय अर्थव्यवस्था की सामान्य विशेषताएँ - प्रकृति और जंगल पर निर्भरता, आत्मनिर्भर जीवन शैली,कम पूँजी और तकनीकी साधन, सीमित बाज़ार संपर्क, परंपरागत ज्ञान का उपयोग

6.1 कृषि पर निर्भरता - वर्षा आधारित खेती प्रमुख है, जिसमें धान, कोदो-कुटकी जैसी फसलें उगाई जाती हैं।

6.2 वनोपज संग्रह - तेंदूपत्ता, महुआ, साल बीज, चिरौंजी आदि वनोपज आय के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

6.3 पारंपरिक श्रम एवं हस्तशिल्प - बांस शिल्प, लकड़ी का काम और स्थानीय हस्तकला प्रचलित है।

6.4 सामुदायिक जीवन—संसाधनों का सामूहिक उपयोग और आपसी सहयोग जनजातीय समाज की विशेषता है।

7. शहडोल ज़िले में जनजातीय अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ

7.1 शिक्षा और जागरूकता की कमी - मुख्य धारा से दूर एवं सांस्कृतिक भिन्नता, दुर्गम क्षेत्रों में विद्यालयों की कमी और आर्थिक मजबूरियों के कारण ये समुदाय आधुनिक शिक्षा से दूर रहे हैं। सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं के द्वारा, संचार, परिवहन साधनों, छात्र वृत्ति, आवासीय विद्यालयों के निर्माण से इस कमी को पूरा करने का प्रयास किया गया है। किन्तु अभी भी ये समुदाय शिक्षा और जागरूकता में मुख्य धारा से पीछे हैं।

7.2 भूमि और वन अधिकारों की समस्या - आदि काल से वन भूमि पर सांस्कृतिक और आर्थिक निर्भरता के बावजूद कई जनजातीय परिवारों को भूमि और वन अधिकारों का पूर्ण लाभ नहीं मिल पाया है। स्वतन्त्र भारत में वन कानूनों, वन संरक्षण, अभयारण्यों और राष्ट्रीय उद्यानों के निर्माण से जनजातियों की परम्परागत वन आधारित आर्थिक व्यवस्था प्रभावित हुई है। इसमें झूम खेती पर प्रतिबन्ध, आरक्षित व संरक्षित वनों में लकड़ी काटने पर रोक, वन्य जीवों के आखेट पर प्रतिबन्धों वन आधारित अर्थव्यवस्था को बाधित किया है। अतः इनकी वैकल्पिक अर्थव्यवस्था को बनाने की चुनौती है।

7.3 सीमित रोज़गार अवसर - जनजातियों की सरल और जीविकोपार्जक आर्थिक क्रियायें होती हैं इनमें भविष्य के लिए संग्रहण और लाभ की दृष्टि से आर्थिक क्रियायें नहीं होती है। जिससे कुटीर, लघु उद्योगों के प्रति इनका प्रयास नहीं होता है। दूसरी ओर आद्यौगिक गतिविधियाँ मुख्यतः कस्बों, नगरों में संचालित होती हैं जिससे इन आर्थिक क्रियाओं में शामिल होने के लिए निवास से दूरी एक बाधा है। अतः रोज़गार के अवसरों की कमी के कारण पलायन की समस्या बढ़ती है।

7.4 बाज़ार तक पहुँच का अभाव - आदिवासी समुदाय वनों में रहता है। वन संग्रहण जिसमें महुआ, महुआ पत्ते, खैर, हर्रा, बहेरा, गोंद, राल, कंदमूल, वन औषधियाँ प्राप्त करते हैं लेकिन बजार से जुड़ाव और ज्ञान के अभाव में वनसंग्रह से प्राप्त वस्तुओं का उचित मूल्य प्राप्त नहीं हो पाता जिससे यह आर्थिक क्रिया सार्थक नहीं हो पाती है। बैगा जनजाति में पारम्परिक ज्ञान से वन औषधियों का ज्ञान है लेकिन आधुनिक चिकित्सा प्रमाण और प्रचार प्रसार के अभाव में उनके इस ज्ञान का आर्थिक लाभ नहीं मिल पाता है। वनोपज और हस्तशिल्प का बाजार ज्ञान न होने से इन उत्पादों को उचित मूल्य नहीं मिल पाता नहीं है।

© 2026 अजय सिंह पटेल, डॉ० संतोष पुरी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

7.5 स्वास्थ्य और पोषण की समस्या- कृषि का वन पर दबाव, वन संरक्षण, भूमिमूल्य में वृद्धि, कस्बों और नगरों का प्रसार, पारम्परिक फसलों और वन व वन जीव आधारित पोषण में कमी से शारीरिक दक्षता में कमी और कुपोषण बढ़ा है। स्वास्थ्य सुविधा कमी भी जनजातीय श्रमिकों की क्षमता को प्रभावित करती हैं। जिससे श्रम आधारित आर्थिक क्रियाओं में कमी आती है।

8. शहडोल ज़िले में विकास के अवसर

8.1 वनोपज आधारित उद्योग - शहडोल जिला पर्वत, पठारी विशेषता से युक्त होने के कारण वन संसाधनों से धनी है इन वनों में सभी प्रकार की इमारती, जलाऊ लकड़ी, अनेक प्रकार के फल फूल जिनमें बजार में बिक्री हेतु महुआ, चार, तेंदू, सीताफल, आम, जामुन, आँवला, इमली, बेल औषधीय पौधों में नीम, अश्वगंधा, शतावर, बज्रदंती, ब्राम्ही, गिलोई, अर्जुन की छाल, खैर, सिन्कोना, गोंद एवं अनेक प्रकार के कन्द जैसे काली हल्दी, मूसली, वन अदरक आदि उपलब्ध है।महुआ, तेंदूपत्ता और औषधीय पौधों पर आधारित लघु उद्योग स्थापित किए जा सकते हैं। बॉस आधारित अमलई का कारखाना, खैर, लाख, स्याही, फर्नीचर आदि उद्योगों की तरह और उद्योगों को स्थापित किया जा सकता है जिससे आदिवासी समूहों की भागीदारी के अवसर उत्पन्न होते हैं।

8.2 कृषि का आधुनिकीकरण - शहडोल जिले में आरक्षित और संरक्षित वन भूमि के अतिरिक्त भूमि मानव अनुपात की दृष्टि से जनधनत्व अपेक्षाकृत कम है जिससे भूमि की पर्याप्त मात्रा है इस भूमि को कृषि योग्य बनाया जा सकता है। जहां यह भूमि कृषि-युक्त है, उसे सिंचाई साधनों के विकास से सिंचित भूमि में परिवर्तित किया जा सकता है। इस भूमि पर पारम्परिक धान और मोटे अनाज की तुलना में सब्जियाँ और अधिक बाजार मूल्य देने वाली फसलों का उत्पादन किया जा सकता है जिससे कृषि आय में वृद्धि हो सके। आदिवासियों हेतु सरकारों द्वारा तालाब, नलकूल अनुदान दिया जाता है। इस हेतु आदिवासियों में जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है। इसी प्रकार सूक्ष्म सिंचाई, उन्नत बीज और जैविक खेती से उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है। इस हेतु सरकारो द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

8.3 कौशल विकास कार्यक्रम -स्थानीय युवाओं को तकनीकी, हस्तशिल्प और स्वरोज़गार का प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। शहडोल जिले में उद्यमिता विकास केन्द्र, पालीटेक्निक, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में कौशल विकास प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों शिविरों का आयोजन किया जाता है। इसमें सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन अपना योगदान देते हैं। मोबाइल और संचार साधनों द्वारा इनका प्रचार प्रसार किया जाता है। अभी भी सुदूर दुर्गम भौगोलिक क्षेत्रों में पर्याप्त सड़क मार्गों एवं यातायात के साधनों के पर्याप्त विकास की आवश्यकता है जिससे इन कार्यों को प्रत्येक आदिवासी समूह तक पहुँचाया जा सके।

8.4 सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन - सेवाभाव से युक्त व्यक्तियों, संस्थाओं एवं स्थानीय समुदायों की भागीदारी से सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन किया जा सकता है। जिनमें वन अधिकार अधिनियम, मनरेगा और जनजातीय विकास योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू किया जा सकता है।

8.5 जनजातीय पर्यटन की संभावना - शहडोल में अनेक प्रकार की संस्कृति से युक्त जनजातियाँ निवास करती है जिनमें विशिष्ट खानपान, भेषभूषा, परम्परायें, उत्सव व विशेषतायें हैं जिनकी जानकारी शेष विश्व को नहीं है। यहाँ उपलब्ध राष्ट्रीय अभ्यरण्यों हेतु पर्यटन व्यवस्थाओं में आदिवासी पर्यटन को जोड़कर इसका विकास किया जा सकता है। इससे एक ओर जनजातियों का शेष विश्व से सम्पर्क होगा दूसरी ओर पर्यटन से प्राप्त अर्थ से आदिवासियों की आर्थिक स्थिति में सुधार किया जा सकता है।

9. निष्कर्ष

शहडोल ज़िले की जनजातीय अर्थव्यवस्था प्राकृतिक संसाधनों और पारंपरिक ज्ञान पर आधारित है। यद्यपि इस क्षेत्र में अनेक सामाजिक-आर्थिक चुनौतियाँ मौजूद हैं, फिर भी सही नीतियों, स्थानीय संसाधनों के उचित उपयोग और जनजातीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी से शहडोल ज़िले में जनजातीय अर्थव्यवस्था को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।

10. सुझाव

- जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार किया जाए।
- वनोपज के लिए स्थानीय संग्रह और प्रसंस्करण केंद्र स्थापित किए जाएँ।
- जनजातीय युवाओं के लिए स्वरोज़गार योजनाओं को बढ़ावा दिया जाए।
- भूमि और वन अधिकारों को सरल प्रक्रिया के माध्यम से सुनिश्चित किया जाए।
- सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं के बीच समन्वय बढ़ाया जाए।

संदर्भ

1. उग्रभान दाहिया, राय एससी. शहडोल जिले के बैगा आदिवासी समाज में सामाजिक परिवर्तन का एक अध्ययन. IJARSCT. 2024;4(2). doi:10.48175/IJARSCT-17095. उपलब्ध: https://ijarsct.co.in/Paper17095.pdf
2. SHISRRJ Journal. शोध पत्र. उपलब्ध: https://shisrrj.com/paper/SHISRRJ247111.pdf (नोट: 403 त्रुटि — सीधी पहुँच अवरुद्ध).
3. अंसारी खुदैजा परवीन. मध्यप्रदेश के प्रमुख जनजातीय हस्तशिल्प उद्योग. NAVJYOT. ISSN: 2277-8063. उपलब्ध: https://navjyot.net/wp-ontent/uploads/2022/09/4.pdf
4. स्थानीय फ़ाइल. thb2312016.79-94.2-12.pdf. (नोट: यह फ़ाइल केवल स्थानीय कंप्यूटर पर उपलब्ध है।)

© 2026 अजय सिंह पटेल, डॉ० संतोष पुरी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

5. दुबे प्रीति, सिंह प्रभाकर. मध्य प्रदेश राज्य में जनजातियों के कल्याण में शासकीय विकास कार्यक्रमों एवं योजनाओं का प्रभाव. IJMT. 2025;7(11):91–95. E-ISSN: 2709-9369. उपलब्ध: https://www.multisubjectjournal.com/article/826/7-11-5-702.pdf
6. मध्यप्रदेश जनसम्पर्क. मंत्री/विभाग सूचना. उपलब्ध: https://mpinfo.org/Home/Frm_Minister_Depart_Info?catId=99 (नोट: डायनामिक पेज).
7. भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक. जनजातीय कार्य विभाग, मध्यप्रदेश शासन: प्रशासनिक प्रतिवेदन 2017–18. उपलब्ध: https://cag.gov.in/uploads/media/ADMINISTRATIVE-REPORT-2017-18
8. मध्यप्रदेश जनसंपर्क. आदिम जाति कल्याण विभाग समाचार. उपलब्ध: https://www.mpinfo.org/Home/Frm_Minister_Depart_Info?newsid=20241114N57&catId=99&pubdate=11/14/2024
9. जिला सांख्यिकी कार्यालय, शहडोल. जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2011. (स्रोत: जनगणना 2011 — जिलावार अनुसूचित जनजाति जनसंख्या, मध्यप्रदेश).
10. Verma V. Tribal economy. In: Tribal Cultures of India. INFLIBNET e-Book. उपलब्ध: https://ebooks.inflibnet.ac.in/antp05/chapter/tribal-economy/
11. शहडोल जिला मानचित्र (SVG). उपलब्ध: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:MP_Shahdol_district_map.svg
12. INFLIBNET (Google अनुवादित संस्करण). जनजातीय अर्थव्यवस्था अध्याय. उपलब्ध: https://ebooks-inflibnet-ac-in.translate.goog/antp05/chapter/tribal economy/

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

श्री अजय सिंह पटेल यूजीसी-नेट एवं एमपी-सेट उत्तीर्ण हैं तथा भूगोल विषय में पीएच.डी. शोधरत हैं। वे पंडित शंभूनाथ शुक्ला विश्वविद्यालय, शहडोल में विजिटिंग फैकल्टी हैं। उनके 6+ शोध पत्र UGC-CARE पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। उनके प्रमुख शोध क्षेत्र भौतिक, पर्यावरण एवं मानव भूगोल हैं।

डॉ. संतोष पुरी ने रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर से अर्थशास्त्र में एम.फिल. एवं पीएच.डी. (2016) प्राप्त की। वे पंडित शंभूनाथ शुक्ला विश्वविद्यालय, शहडोल में विजिटिंग फैकल्टी हैं। उनके शोध क्षेत्र विकासात्मक अर्थशास्त्र, उद्यमिता, बीमा एवं जनजातीय अर्थशास्त्र हैं। उनकी पुस्तक प्रकाशित है तथा 15+ शोध पत्र UGC-CARE पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं।

© 2026 अजय सिंह पटेल, डॉ॰ संतोष पुरी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/